15 मिनट में ही तबाह हुआ केदारनाथ

केदारनाथ मंदिर के पुरोहित दिनेश बगवाड़ी ने किया दावा

अमर उजाला ब्यूरो

हल्द्वानी। केदारनाथ मंदिर के पुरोहित दिनेश बगवाड़ी उन लोगों में जिन्हें आप खुशकिस्मत भी कह सकते हैं बदकिस्मत भी। बगवाड़ी ने शिव की नगरी में मौत का तांडव अपनी आंखों से देखा। भले ही वे खुद बच गए लेकिन परिवार के पांच लोगों का अभी तक पता नहीं। उनका दर्द और आंखों देखी बीबीसी द्वारा लिए गए इंटरव्यू के रूप में फेसबुक पर टैग है।

उन्होंने अपना दर्द इस तरह बयां किया। रविवार रात बहुत बारिश के बाद सोमवार सुबह से ही बाढ़ का खतरा मंडरा रहा था। आठ बजे के करीब मैं मंदिर के अहाते में साफ-सफाई करवा रहा था और

फेसबुक पर टैग है बीबीसी का लिया इंटरव्यू

बाहर से आए तीर्थ यात्रियों को भी हौसला बंधा रहा था। 8.10 पर धमाके की आवाज हुई। केदारनाथ से करीब तीन किमी. ऊपर स्थित गांधी सरोवर फट गया और मलबा केदारनाथ की तरफ आने लगा। सवा आठ बजे मलबे और पानी का परवाह इतना तेज हो गया कि 8.30 बजे तक पूरा केदारनाथ तबाह हो गया। दो घंटे बाद तबाही का मंजर नजर आने लगा था। मेरे परिवार के पांच लोग भी गायब हैं। मैं अब सुरक्षित स्थान पर पहुंच चुका हूं और अपने परिवार के इंतजार में हूं।

3800 मीटर की ऊंचाई पर केदार पर्वत पर फटा बादल

देहरादून। 16 जून की रात आई आपदा ने सबसे ज्यादा नुकसान केदारघाटी को पहुंचाया है। 3800 मीटर की ऊंचाई पर चारबाड़ा के आसपास बादल फटे, जिससे पूरी केदारघाटी तहस नहस हो गई।

केदारनाथ क्षेत्र में तैनात रहे एक आईएएस के मुताबिक केदारनाथ मंदिर 3584 मीटर पर स्थित है। उससे भी ज्यादा ऊंचाई पर चारबाड़ा के आसपास कहीं बादल फटा। इतनी ऊंचाई से गिरते पानी ने पहले केदारनाथ मंदिर के आसपास के इलाके को अपने आगोश में लिया होगा उसके बाद कुछ ही मिनट में सीधे 1000 मीटर नीचे स्थित रामबाड़ा में घुसा होगा। इतना ढलान मिलने के बाद

केदारनाथ क्षेत्र में तैनात रहे एक आईएएस ने लगाया अनुमान

पानी का वेग किसी विस्फोटक से कम नहीं रहा होगा। जिसके चलते पूरा रामबाड़ा बह गया। कुछ ही मिनट में पानी वहां से करीब 600 मीटर नीचे स्थित गौरीकुंड में पहुंचा होगा। गौरीकुंड में मंदाकिनी नदी काफी संकरी है। ऊपर से तेज गति से आते पानी से गौरीकुंड भी पूरी तरह बर्बाद हुआ और सोनप्रयाग पहुंचते-पहुंचते पूरी केदारघाटी को पानी के इस आवेग ने क्षतिग्रस्त कर दिया है। केदारनाथ मंदिर से गौरीकुंड सीधे 1600 मीटर नीचे है। इसी पानी के वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। **ब्यूरो**